दृष्टि से सृष्टि की रचना

(टीचर्स ट्रेनिंग क्लास - ओपनिंग सेरीमनी)

अव्यक्त स्थिति में रहते यज्ञ में कार्य कर रहे हो? जैसे बाप अव्यक्त होते, व्यक्त में प्रवेश हो कार्य करते हैं वैसे बाप समान बने हो? बाप समान बनेंगे तब ही औरों को भी बाप समान बना सकेंगे।

अपने आपसे पूछो दृष्टि बाप के समान बनी है? वाणी बाप के समान बनी है? संकल्प बाप के समान बने हैं? बाप को क्या स्मृति में रहता है? जानते हो? बाप की स्मृति में सदैव क्या रहता है और आपकी स्मृति में सदैव क्या रहता है? अन्तर है? (हाँ) क्या अन्तर है? समान स्मृति होती है? कोई स्मृति रहती है कि कोई भी स्मृति नहीं रहती? स्मृति रहती है या स्मृति से भी परे हैं? कोई बात में बाप समान आपकी स्मृति रहती है? वह कौन सी स्मृति? (गुणों की) और भी कोई स्मृति है जो बाप समान हो? (कर्तव्य की) अच्छा गुणों की समानता रहती है?(नहीं) अन्त तक स्मृति में समानता आ जायेगी?(नम्बरवार) फर्स्ट बच्चे (ब्रह्मा) और बाप में फर्क रहेगा? बापदादा में फर्क रहेगा? समानता आ जायेगी? जैसे बाप बेहद का बाप है वैसे दादा भी बेहद का बाप है। बापदादा के समीप समानता होनी चाहिए। जितनी जितनी समीपता उतनी समानता। अन्त में आप बच्चे भी अपनी रचना के रचयिता बनकर प्रैक्टिकल में अनुभव करेंगे। जैसे बाप को, रचना को देख रचयिता के स्वरूप की स्मृति स्वत: रहती है। ऐसी स्टेज नम्बरवार बच्चों की भी आनी है। अच्छा।

(जानकी दादी को देख) दृष्टि से सृष्टि रचने आती है? आपकी रचना कैसी है? मुख से वा नयनों से? (मुख से, अभी तक ऐसे है आगे से ख्याल रखेंगे) दृष्टि से रचना रचेंगे? यह जो कहावत है दृष्टि से सृष्टि। जैसे सतयुग में योगबल की रचना होती है वैसे अन्त में आप सबकी दृष्टि से सृष्टि बनेगी। ऐसी दृष्टि जिससे सृष्टि बदल जाए। ऐसे अपनी दृष्टि में दिव्यता अनुभव करते जा रहे हो? दृष्टि धोखा भी देती है और दृष्टि पतितों को पावन भी करती है। दृष्टि बदलने से सृष्टि बदल ही जाती है। तो दृष्टि कहाँ तक बदली है? दृष्टि क्या बदलनी होती है, यह मालूम है? आत्मिक दृष्टि बनानी है। आत्मिक दृष्टि और दिव्य दृष्टि तथा अलौकक दृष्टि बनी है? जहाँ देखते, जिसको देखते आत्मिक स्वरूप ही दिखाई दे। ऐसी दृष्टि बदली है? बनी है? जब दृष्टि में अर्थात् नेत्रों वा नयनों में खराबी होती है तो एक समय में दो दो चीज़ दिखाई पड़ती हैं। ऐसे दृष्टि पूरी नहीं बदली है तो यहाँ भी दो दो चीज़ें दिखाई पड़ती हैं। देह

और देही कभी वह, कभी वह दिखाई पड़ती, ऐसे होता है ना। कब देह को देखते, कब देही को। जब नयन बिल्कुल ठीक होते हैं तो जो चीज़ जैसी होती है वैसी यथार्थ रूप में दिखाई पड़ती है। ऐसे यह दृष्टि भी जब बदल जाती है तो जो यथार्थ रूप है, यथार्थ रूप क्या है? देही न कि देह। तो जो यथार्थ रूप है वैसा ही दिखाई दे, तब समझो कि दृष्टि ठीक है। दृष्टि के ऊपर बहुत ध्यान देना है। दृष्टि बदल गई तो कभी धोखा नहीं देगी। साक्षात्कार दृष्टि से करेंगे और एक एक की दृष्टि में अपना यथार्थ रूप और यथार्थ घर और राजधानी देखेंगे, इतनी दृष्टि में पावर है, अगर यथार्थ दृष्टि है तो। तो सदैव अपने को चेक करो कि अभी कोई भी सामने आवे तो मरी दृष्टि द्वारा क्या साक्षात्कार करेंगे, जो आपकी वृत्ति में होगा वैसे अन्य आपकी दृष्टि से देख सकेंगे। अगर वृत्ति देह अभिमान की है, चंचल है तो आपकी दृष्टि से साक्षात्कार भी ऐसे होगा। औरों की भी दृष्टि, वृत्ति चंचल होगी। यथार्थ साक्षात्कार कर नहीं सकेंगे। समझते हो? इन्हों की ट्रेनिंग है ना। इस ग्रुप के लिए मुख्य विषय है अपनी वृत्ति के सुधार से अपनी दृष्टि को और दिव्य बनाना। कहाँ तक बनी है, क्यों नहीं बनी है, इस पर इन्हों को स्पष्ट समझाना। (जानकी दादी को इशारा) समझा। सृष्टि न बदलने का कारण? दृष्टि न बदलना। दृष्टि न बदलने का कारण? वृत्ति न बदलना। दृष्टि बदल जाए तो सृष्टि भी बदल जाए।

आजकल सभी बच्चों के प्रति विशेष इशारा बापदादा का यही है कि अपनी दृष्टि को बदलो। साक्षात्कार मूर्त बनो। देखने वाले ऐसे अनुभव करें कि यह नयन नहीं लेकिन यह एक जादू की डिब्बियां हैं। जैसे जादू की डिब्बी में भिन्न-भिन्न नजारे देखते हैं वैसे आपके नयनों में दिव्य रंगत देखें। नयन साक्षात्कार के साधन बन जावें। समझा। यह ग्रुप मालूम है कौन सा ग्रुप है? इनमें विशेषता क्या है? हर एक ग्रुप की अपनी-अपनी विशेषता है। क्यों? सारे विश्व के अन्दर विशेष आत्मायें हो। ऐसे तो नहीं समझते हम साधारण हैं? ऐसे कभी नहीं समझना। सारे विश्व के अन्दर विशेष आत्मायें कौन हैं? अगर आप विशेष आत्मायें न होती तो बाप ने अपना क्यों बनाया? अपने को विशेष आत्मा समझने से विशेषता लायेंगे। अगर साधारण समझेंगे तो कर्तव्य भी साधारण करेंगे। लेकिन नहीं। एक एक आत्मा को अपने को विशेष समझकर औरों में भी विशेषता लानी है। तो तुम बच्चे विशेष आत्मायें हो। यह नशा ईश्वरीय नशा है। देह भान का नशा नहीं। ईश्वरीय नशा सदैव नयनों से दिखाई दे। तो इस ग्रुप की विशेषता क्या है? आप अपने ग्रुप की विशेषता समझते हो? क्या है? (इनके दिलों में उत्साह है, ग्रहण करने की भावना है, सीखने का उमंग है, कोरा कागज है) इस ग्रुप का टाइटल तो बहुत बड़ा है। सुन रहे हो अपनी विशेषतायें। ट्रेनिंग के बाद यही गुण कायम रहें। यह भी ट्रेनिंग चाहिए। समझा।

अभी तो विशेषतायें बहुत अच्छी सुना रहे हैं। कोरे कागज पर जो कुछ लिखा जाता है वह स्पष्ट रहता है। जितना स्पष्ट उतना श्रेष्ठ। अगर स्पष्टता में कमी तो श्रेष्ठता में भी कमी। और मिक्स नहीं करना है। कोई-कोई मिक्स बहुत करते हैं। इससे क्या होता, यथार्थ रूप भी अयथार्थ हो जाता है। वही ज्ञान की बातें माया का रूप बन जाती हैं। इसलिए इस ग्रुप की यही विशेषता विश्व में दिखाई दे कि यह ग्रुप सदा स्पष्ट और श्रेष्ठ रहा। सदैव अपने यथार्थ रूप में रहे, जो बात जैसी है उसे उसी रूप से जानकर, धारण करना है और चलते चलना है, यह है स्पष्टता। इस ग्रुप को बापदादा क्या टाइटल देते हैं?

जैसे कहावत है कि जो छोटे सो सुभान अल्लाह। लेकिन बापदादा कहते छोटे हैं तो समान अल्लाह। सब बातों में कदम में समानता रखो। लेकिन समानता कैसे आयेगी? समानता के लिए दो बातें ध्यान में रखनी पड़ेंगी तब समानता आयेगी। वह दो बातें कौनसी रखनी पड़ेंगी? बापदादा के समान बनना है तो समान बनने के लिए क्या बुद्धि में रखना पड़ेगा? (बापदादा को ही रखेंगे) पहले सुनाया भी है क्या रखेंगे? समान कैसे बनेंगे? साकार रूप में क्या विशेषतायें थी? एक तो अपने को सदैव आधारमूर्त समझो। सारे विश्व के आधार मूर्त, इससे क्या होगा कि जो भी कर्म करेंगे जिम्मेवारी से करेंगे। अलबेलापन नहीं रहेगा। जैसे बापदादा सर्व के आधार मूर्त हैं वैसे हर एक बच्चा विश्व के आधारमूर्त है। जो कर्म आप करेंगे वह सब करेंगे। संगम पर जो रीति रसम यथार्थ चलती है, वह भक्ति मार्ग में बदलकर चलती है। तो सारे विश्व के आप आधारमूर्त हो। आप हर एक को अपने को आधार मूर्त समझना है और दूसरा उद्धार मूर्त भी बनना है। जितना अपना उद्धार करेंगे उतना औरों का उद्धार करेंगे। जितना औरों का उद्धार करेंगे उतना अपना भी उद्धार करेंगे। अपना उद्धार नहीं करेंगे तो औरों का कैसे करेंगे। औरों का उद्धार तब करेंगे जब आधारमूर्त बनेंगे।

छोटे होते भी कर्तव्य बाप समान करना है। यह याद रखने से समानता आयेगी। फिर जो इस ग्रुप का टाइटल दिया '' छोटा बाप समान'', वह प्रत्यक्ष दिखाई पड़ेगा। यह नहीं भूलना। अच्छा अब क्या करना है? (टीका लगाना है) यह टीका भी साधारण नहीं है। टीका किसलिए लगाते हैं, मालूम है? सौभाग्य की निशानी है। जो बातें सुनी उन सब बातों में टिकने की निशानी टीका है। टीका भी मस्तक में टिक जाता है। तो बुद्धि में यह सब बातें टिक जावें इसलिए यह टीका दिया जाता है। और किसलिए है? और टीका क्यों लगाते हैं? (बिन्दी रूप के स्थिति की निशानी, राजतिलक, विजय का तिलक, जिम्मेवारी का टीका, भिन्न-भिन्न विचार सुनाये)

बापदादा जो सुनायेगा वह और है। टीका, तिलक को तो कहते हैं लेकिन और भी कोई होता है? (इन्जेक्शन) यह टीका (ज्ञान इंजेक्शन) सदा माया के रोगों से निवृत्त रहने का भी

टीका है। सदा तन्दरूस्त रहने का भी टीका है। एक टीका जो आप सबने सुनाया, दूसरा यह भी है। दोनों टीके लगाने हैं। एक है शक्तिशाली बनने का और दूसरा है सदा सुहाग और भाग्य में स्थित रहने का। दोनों टीके बापदादा लगाते हैं। निशानी एक, राज़ दो होते हैं। निशानी तो स्थूल है लेकिन राज़ दो हैं। इसलिए ऐसे तिलक नहीं लगाना। तिलक लगाना अर्थात् सदाकाल के लिए प्रतिज्ञा करना। क्या प्रतिज्ञा करना है? यह टीका एक प्रतिज्ञा की निशानी है। सदैव हर बात में पास विद आनर बनेंगे। इस प्रतिज्ञा का यह तिलक है। इतनी हिम्मत है? पास नहीं बल्कि पास विद आनर अर्थात् मन में भी संकल्पों से सजा नहीं खावें। धर्मराज के सजाओं की बात पीछे है परन्तु अपने संकल्पों की भी उलझन अथवा सजाओं से परे रहें। इसको कहते हैं पास विद आनर। अपनी गलती से स्वयं को सजा देते, उलझते हैं, पुकारते हैं, मूंझते हैं, इससे भी परे। पास विद आनर उसको कहते हैं। ऐसी प्रतिज्ञा करने के लिए तैयार रहो। संकल्पों में भी न उलझें, वाणी, कर्म, संबंध, सम्पर्क की बात छोड़ दो। वह मोटी बात है। ऐसी प्रतिज्ञा वाला ग्रुप है? हिम्मतवान हैं। हिम्मत कायम रहेगी तो सर्व के मददगार रहेंगे। सहयोगी बनेंगे तो स्नेह मिलता रहेगा। जैसे वृक्ष में जो कोमल और छोटे छोटे नये पत्ते निकलते हैं वह बहुत प्रिय लगते हैं लेकिन चिड़ियायें भी कोमल पत्तों को खाती हैं। समझते हो? सिर्फ प्यारे रहना है किसके? बापदादा के न कि माया रूपी चिड़ियाओं के। तो यह भी कोमल पत्ते हैं। कोमल पत्तों को कमाल करनी है। क्या कमाल करनी है? अपने ईश्वरीय चरित्र के ऊपर सर्व को आकर्षित करना है, अपने ऊपर नहीं। चरित्रों के ऊपर। इस ग्रुप के ऊपर पूरा ध्यान है। समझा। इसलिए इस ग्रुप को अपने ऊपर भी इतना ही ध्यान रखना है। अच्छा। ओम् शान्ति।

वरदान:- संकल्प, बोल और कर्म के व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने वाले होलीहंस भव

होलीहंस का अर्थ है - संकल्प, बोल और कर्म के व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने वाले क्योंकि व्यर्थ जैसे पत्थर होता है, पत्थर की वैल्यु नहीं, रत्न की वैल्यु होती है। होलीहंस फौरन परख लेता है कि ये काम की चीज़ नहीं है, ये काम की है। कर्म करते सिर्फ यह स्मृति इमर्ज रहे कि हम राजयोगी नॉलेजफुल आत्मायें रूलिंग और कन्ट्रोलिंग पावर वाली हैं, तो व्यर्थ आ नहीं सकता। यह स्मृति होलीहंस बना देगी।

स्लोगन:-

जो स्वयं को इस देह रूपी मकान में मेहमान
समझते हैं वही निर्मोही रह सकते हैं।